श्री नृसिंह देवो जयति

श्रीभक्त-नामावली

हमसों इन साधुन सों पंगति।
जिनको नाम लेत दुख छूटत, सुख लूटत तिन संगति॥
मुख्य महन्त काम रति गणपति, अज महेस नारायण।
सुर नर असुर मुनी पक्षी पशु, जे हरि भक्ति परायण॥
वाल्मीकि नारद अगस्त्य शुक, व्यास सूत कुल हीना।
शबरी स्वपच वशिष्ठ विदुर, विदुरानी प्रेम प्रवीना॥
गोपी गोप द्रोपदी कुन्ती, आदि पाण्डवा ऊधो।
विष्णु स्वामि निम्बारक माधो, रामानुज मग सूधो॥
लालाचारज धनुर्दास, कूरेश भाव रस भीजे।
ज्ञानदेव गुरु शिष्य त्रिलोचन, पटतर को कहि दीजे॥
पद्मावती चरण को चारन, कवि जयदेव जसीलौ।
चिन्तामणि चिद्रूप लखायो, विल्वमंगलहिं रसीलौ॥
केशवभट्ट श्रीभट्ट नारायन, भट्ट गदाधर भट्टा।
विट्ठलनाथ वल्लभाचारज, व्रज के गूजरजट्टा॥
नित्यानन्द अद्वैत महाप्रभु, शची सुवन चैतन्या।
भट्ट गोपाल रघुनाथ जीव, अरु मधु गुसांई धन्या॥

रूप सनातन भजि वृन्दावन, तजि दारा सुत सम्पति।
व्यासदास हरिवंश गुसांई, दिन दुलराई दम्पति॥
श्रीस्वामी हरिदास हमारे, विपुल विहारिनि दासी।
नागरि नवल माधुरी बल्लभ, नित्य विहार उपासी॥
तानसेन अकबर करमैती, मीरा करमा बाई।
रत्नावती मीर माधो, रसखान रीति रस गाई॥
अग्रदास नाभादि सखी ये, सबै राम सीता की।
सूर मदनमोहन नरसी अलि, तस्कर नवनीता की॥
माधोदास गुसांई तुलसी, कृष्णदास परमानन्द।
विष्णुपुरी श्रीधर मधुसूदन, पीपा गुरू रामानन्द॥
अलि भगवान मुरारि रसिक, श्यामानन्द रंका वंका।
रामदास चीधर निष्किञ्चन, सम्हन भक्त निसंका॥
लाखा अङ्गद भक्त महाजन, गोविन्द नन्द प्रबोधा।
दास मुरारि प्रेमनिधि विट्ठलदास, मथुरिया योधा॥
लालमती सीता प्रभुता, झाली गोपाली बाई।
सुत विष दियौ पूजि सिलपिल्ले, भक्ति रसीली पाई॥
पृथ्वीराज खेमाल चतुर्भुज, राम रसिक रस रासा।
आशकरण जयमल मधुकर नृप, हरिदास जन दासा॥
सेना धना कबीरा नामा, कूबा सदन कसाई।
बारमुखी रैदास सभा में, सही न श्याम हँसाई॥
चित्रकेतु प्रह्लाद विभीषण, बलि गृह वाजे बावन।
जामवन्त हनुमन्त गीध गुह, किये राम जे पावन॥
प्रीति प्रतीति प्रसाद साधु सों, इन्हें इष्ट गुरु जानों।
तजि ऐश्वर्य मरजाद वेद की, इनके हाथ बिकानों॥
भूत भविष्य लोक चौदह में, भये होयँ हरि प्यारे।
तिन-तिन सों व्यवहार हमारो, अभिमानिन ते न्यारे॥
'भगवतरसिक' रसिक परिकर करि, सादर भोजन पावै।
ऊँचो कुल आचार अनादर, देखि ध्यान नहिं आवै॥

**

श्री प्रह्लाद छंद

सुमिरन साँचो कियो लियो देखि सबहीं में एक भगवान् कैसे काटै तरवार है।
काटिबो खडग जल बोरिबो सकति जाकी ताहिको निहारै चहूँ ओर सो अपार है॥
पूछे ते बतायो खम्भ तहाँ ही दिखायो रूप प्रगट अनूप भक्तवाणी ही सों प्यार है।
दुष्ट डार्‌यौ मारि गरे आंतैं लई डारि तऊ क्रोधको न पार कहा कियो यों बिचार है॥ ९

डरे शिव अज आदि देख्यो नहीं क्रोध ऐसो आवत न ढिंग कोऊ लछिमी हूँ त्रास है।
तब तो पठायो प्रह्लाद अहलाद महा अहो भक्ति भाव पग्यो आयो प्रभु पास है॥
गोद में उठाइ लियो शीस पर हाथ दियो हियो हुलसायो कही वाणी विनयरास है।
आई जग दया लगि पर्‌यो श्रीनृसिंहजू को अर्‌यो यों छुटावो कर्‌यो माया ज्ञान नास है॥ १००॥

गीत गोविंदम

श्रित-कमलाकुच-मण्डल धृतकुण्डल ए।
कलित-ललित-वनमाल जय जय देव हरे ॥१॥
दिनमणि-मण्डल-मण्डन भव-खण्डन ए।
मुनिजन-मानस-हंस जय जय देव हरे ॥२॥
कालिय-विषधर-गञ्जन जनरञ्जन ए।
युदुकुल-नलिन-दिनेश जय जय देव हरे ॥३॥
मधु-मुर-नरक-विनाशन गरुडासन ए।
सुरकुल-केलि-निदान जय जय देव हरे ॥४॥
अमल-कमलदल-लोचन भवमोचन ए।
त्रिभुवन-भवन-निधान जय जय देव हरे ॥५॥
जनकसुता-कृतभूषण जितदूषण ए।
समर-शमित-दशकण्ठ जय जय देव हरे ॥६॥
अभिनव-जलधर-सुन्दर धृतमन्दर ए।
श्रीमुख-चन्द्र-चकोर जय जय देव हरे ॥७॥
तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ॥८॥
श्रीजयदेवकवेरुदितमिदं कुरुते मुदम्।
मङ्गल-मञ्जुल-गीतं जय जय देव हरे ॥९॥